(i) **Printed Pages: 3** **Roll No. .....**

(ii) **Questions : 8** **Sub. Code : 0 1 1 2**

Exam. Code : 0 0 0 2

B.A./B.Sc. (General) 2nd Semester

1059

SANSKRIT (Elective)

Paper : Katha, Niti Avem Vyakran

Time Allowed : Three Hours] **[Maximum Marks : 90**

नोट :— (1) सुन्दर, संक्षिप्त एवं सारगर्भित लिखें।

(2) उत्तरपुस्तिका में प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

(3) प्रश्नों को क्रमशः हल करने का प्रयत्न करें।

1. निम्न गद्यांशों में से **एक** का सप्रसंग अनुवाद करें :

(क) एतस्मिन्समये तस्मिन् पत्राने कश्चिद् वणिकपुत्रो मृतः। तस्य दाहाय महाजनो गतोऽभूतं। ततश्चतुर्णां मध्यादेकेन पुस्तकमवलोकितं, "महाजनो येन गतः स पन्थाः'' इति। "तन्महाजनमार्गेण गच्छामः।''

(ख) तदहमन्यं जलाशयमद्यैव सभार्यो यास्यामि। एवमुक्त्वा स मण्डूको रात्रावेवाऽन्यजलाशयं गतः। धीवरैरपि प्रभाते आगत्य, जघन्यमध्यमोत्तमजलचराः मत्स्यकूर्ममण्डूक — कर्कटादयो गृहीताः। तावपि शतबुद्धिसहस्त्रबुद्धि सभार्यौ पलायमानौ चिरमात्मानं गति विशेषविज्ञानैः कुटिलाचारेण रक्षन्तौ जाले निपतितौ, व्यापादितौ च।

(ग) अथ तस्य रात्रौ क्षेत्राणि पर्यटतः, कदाचिच्छृगालेन सह मैत्री संजाता। स च पीवरत्वाद् वृति भङ्गं कृत्वा कर्कटिका-क्षेत्रे शृगालसहितः प्रविशति। एवं तौ यदृच्छया चिर्भटिका भक्षणं कृत्वा, प्रत्यहं प्रत्यूषे स्वस्व स्थानं व्रजतः। 1×5=5

2. निम्न श्लोकों में से **दो** की सप्रसंग व्याख्या करें :

(क) सुबुद्धयो विनश्यन्ति दुष्टदैवेन नाशिता:।
स्वल्पधीरपि तस्मिंस्तु कुले नन्दति सन्ततम्।।

(ख) सर्पाणां च खलानां च सर्वेषां दुष्टचेतसाम्।
अभिप्राया न सिध्यन्ति तेनेदं वर्तते जगत्।।

(ग) यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा मित्रोक्तं न करोति य:।
स एव निधनं याति, यथा मन्थरकौलिक:।।

(घ) राजा दानपरो नित्यमिह कीर्तिमवाप्य च।
तत्प्रभावात् पुन: स्वर्गे स्पर्धते त्रिदशै: सह।। 2×5=10

3. 'मूर्खपण्डित कथा' अथवा 'गीतपरायणरासभशृगालकथा' में से एक कथा का सार लिखें। 1×5=5

4. निम्न श्लोकों में से **दो** की सप्रसंग व्याख्या करें :

(क) प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचै:,
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्या:।
विघ्नै: पुन: पुनरपि प्रतिहन्यमाना:
प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति।।

(ख) कुसुमस्तबकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विन:।
मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य शीर्यते वन एव वा।।

(ग) तानिन्द्रियाण्यविकलानि तदेव नाम
सा बुद्धिरप्रतिहता वचनं तदेव।
अर्थोष्मणा विरहित: पुरुष: क्षणेन
सोऽप्यन्य एव भवतीति विचित्रमेतत्।।

(घ) आज्ञा कीर्ति: पालनं ब्राह्मणानां दानं भोगो मित्रसंरक्षणं च।
येषामेते षड्गुणा न प्रवृत्ता: कोऽर्थस्तेषां पार्थिवोपाश्रयेण।।
2×5=10

5. निम्नलिखित सूक्तियों में से किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :
   (i) अहह ! महतां नि:सीमाश्चरित्रविभूतय: ।
   (ii) सर्वे गुणा: काञ्चनमाश्रयन्ति ।
   (iii) न खलु वयस्तेजसो हेतु: । 1×5=5

6. निम्न शब्दों में से **दस** शब्दों को संस्कृत में लिखें :
   हिरन, कबूतर, बगला, बाज, हाथी, उल्लू, कोयल, बतख, चूहा, आँवला, कमल, चम्पा, पराग, लता, पीतल । 10×1=10

7. (क) निम्न अव्ययों में से **पाँच** अव्ययों का वाक्यों में प्रयोग करें :
   परश्व:, सद्य:, पुरत:, कथम्, बामत:, अद्य:, नीचै:, बहि:, अन्त: उच्चै: । 5×1=5

   (ख) निम्न संख्यावाची शब्दों में से **पांच** को संस्कृत भाषा में लिखें :
   54, 63, 69, 71, 76, 80, 82, 88, 95, 100. 5×1=5

   (ग) निम्न शब्दों में से **दो** शब्दों के संपूर्ण विभक्ति रूप लिखें :
   मातृ, गुरु, अस्मद्, युष्मद् । 2×5=10

   (घ) सभी राशियों अथवा दस दिशाओं के नाम लिखिये । 1×5=5

   (ङ) निम्न धातुओं में से **दो** धातुओं के निर्दिष्ट लकारों के रूप लिखें :
   √लिख्(लोट), √भू(लङ्ग), √त्यज्(लृट्), √स्मृ(लट्) ।
   2×5=10

8. निम्न वाक्यों में से **पांच** वाक्यों का संस्कृत भाषा में अनुवाद करें :
   (क) हम दोनों पढ़ते हैं ।
   (ख) शिव को नमस्कार है ।
   (ग) शोर मत करो ।
   (घ) गुरु शिष्य पर क्रोध करता है ।
   (ङ) घर के दोनों ओर वृक्ष हैं ।
   (च) राम श्याम से अधिक बुद्धिमान है ।
   (छ) वृक्ष से पत्ते झड़ते हैं ।
   (ज) विद्या के बिना जीवन नहीं है ।
   (झ) तुम मैदान में खेलते हो ।
   (ञ) गंगा हिमालय से निकलती है । 5×2=10